कथा सरिता

विद्वता का घमंड

महाकवि कालिदास के कंठ में साक्षात सरस्वती का वास था। शास्त्रार्थ में उन्हें कोई पराजित नहीं कर सकता था। अपार यश, प्रतिष्ठा और सम्मान पाकर एक बार कालिदास को अपनी विद्वता का घमंड हो गया।

उन्हें लगा कि उन्होंने विश्व का सारा ज्ञान प्राप्त कर लिया है और अब सीखने को कुछ बाकी नहीं बचा, उनसे बड़ा ज्ञानी संसार में कोई दूसरा नहीं, एक बार पड़ोसी राज्य से शास्त्रार्थ का निमंत्रण पाकर कालिदास विक्रमादित्य से अनुमति लेकर अपने घोड़े पर रवाना हुए। गर्मी का मौसम था, धूप काफी तेज़ और लगातार यात्रा से कालिदास को प्यास लग आई। थोड़ी तलाश करने पर उन्हें एक टूटी झोपड़ी दिखाई दी। पानी की आशा में वह उस ओर बढ़ चले। झोपड़ी के सामने एक कुआँ भी था।

कालिदास ने सोचा कि कोई झोपड़ी में हो तो उससे पानी देने का अनुरोध किया जाए। उसी समय झोपड़ी से एक छोटी बच्ची मटका लेकर निकली, बच्ची ने कुएं से पानी भरा और वहां से जाने लगी।

कालिदास उसके पास जाकर बोले- बालिके! बहुत प्यास लगी है ज़रा पानी पिला दे। बच्ची ने पूछा- आप कौन हैं? मैं आपको जानती भी नहीं, पहले आप अपना परिचय दीजिए। कालिदास को लगा कि मुझे कौन नहीं जानता भला, मुझे परिचय देने की क्या आवश्यकता?

फिर भी प्यास से बेहाल थे तो बोले - बालिके! अभी तुम छोटी हो, इसलिए मुझे नहीं जानती। घर में कोई बड़ा हो तो उसको भेजो। वह मुझे देखते ही पहचान लेगा। दूर-दूर तक मेरा बहुत नाम और सम्मान है, मैं बहुत विद्वान व्यक्ति हूँ।

कालिदास के बड़बोलेपन और घमंड भरे वचनों से अप्रभावित बालिका बोली- आप असत्य कह रहे हैं। संसार में सिर्फ दो ही बलवान हैं और उन दोनों को मैं जानती हूँ। अपनी प्यास बुझाना चाहते हैं तो उन दोनों का नाम बताएं।

थोड़ा सोचकर कालिदास बोले- मुझे नहीं पता, तुम ही बता दो, मगर मुझे पानी पिला दो, मेरा गला सूख रहा है। बालिका बोली - दो बलवान हैं `अन्न' और `जल'। भूख और प्यास में इतनी शक्ति है कि बड़े से बड़े बलवान को भी झुका दे। देखिए प्यास ने आपकी क्या हालत बना दी है!

कालिदास चकित रह गए, लड़की का तर्क अकाट्य था। बड़े-बड़े विद्वानों को पराजित कर चुके कालिदास एक बच्ची के सामने निरुत्तर थे। बालिका ने पुनः पूछा- सत्य बताएं कौन हैं आप? वह चलने की तैयारी में थी।

कालिदास थोड़ा नम्र होकर बोले- बालिके! मैं बटोही हूँ। मुस्कराते हुए बच्ची बोली- आप अभी भी झूठ बोल रहे हैं। संसार में दो ही बटोही हैं। उन दोनों को मैं जानती हूँ। बताइए वे दोनों कौन हैं? तेज़ प्यास ने पहले ही कालिदास की बुद्धि क्षीण कर दी थी, पर लाचार होकर उन्होंने फिर से अनभिज्ञता व्यक्त कर दी।

बच्ची बोली- आप सव्यं को बड़ा विद्वान बता रहे हैं और ये भी नहीं जाते? एक स्थान से दूसरे स्थान तक बिना थके जाने वाला बटोही कहलाता है। बटोही दो ही हैं, चंद्रमा और दूसरा सूर्य, जो बिना थके चलते रहते हैं। आप तो थक गए हैं। भूख प्यास से बेदम हैं। आप कैसे बटोही हो सकते हैं?

इतना कहकर बालिका ने पानी से भरा मटका उठाया और झोपड़ी के भीतर चली गई। अब तो कालिदास और भी दुःखी हो गए। इतने अपमानित वे जीवन में कभी नहीं हुए। प्यास से शरीर की शक्ति घट रही थी। दिमाग चकरा रहा था। उन्होंने आशा से झोपड़ी की तरफ देखा, तभी अंदर से एक वृद्ध स्त्री निकली। उसके हाथ में खाली मटका था। वह कुएं से पानी भरने लगी। अब तक काफी विनम्र हो चुके कालिदास बोल- माते! पानी पिला दीजिए बड़ा पुण्य होगा।

स्त्री बोली- बोटा मैं तुम्हें नहीं जानती, अपना परिचय दो, मैं अवश्य पानी पिला दूंगी। कालिदास ने कहा- मैं मेहमान हूँ, कृप्या पानी पिला दें। स्त्री बोली- तुम मेहमान कैसे हो सकते हो? संसार में दो ही मेहमान हैं, पहला धन और दूसरा यौवन। इन्हें जाने में समय नहीं लगता। सत्य बताओ कौन हो तुम? अब तक के सारे तर्क से पराजित हताश कालिदास बोले- मैं सहनशील हूँ। अब आप पानी पिला दें। स्त्री ने कहा- नहीं, सहनशील तो दो ही हैं, पहली धरती जो पापी-पुण्यात्मा सबका बोझ सहती है, उसकी छाती चीरकर बीज बो देने से भी अनाज के भंडार देती है, दूसरे पेड़ जिनको पत्थर मारो फिर भी मीठे फल देते हैं। तुम सहनशील नहीं, सच बताओ तुम कौन हो? कालिदास लगभग मूर्च्छा की स्थिति में आ गए और तर्क-वितर्क से झल्लाकर बोले- मैं हठी हूँ।

स्त्री बोली- फिर असत्य। हठी तो दो ही हैं - पहला नख और दूसरे केश। कितना भी काटो, बार-बार निकल आते हैं। सत्य कहें ब्राह्मण कौन हैं आप? पूरी तरह अपमानित और पराजित हो चुके कालिदास ने कहा - फिर तो मैं मूर्ख ही हूँ।

नहीं तुम मूर्ख कैसे हो सकते हो, मूर्ख दो ही हैं, पहला राजा जो बिना योग्यता के भी सब पर शासन करता है और दूसरा दरबारी पंडित जो राजा को प्रसन्न करने के लिए गलत बात पर भी तर्क करके उसे सिद्ध करने की चेष्टा करता है।

कुछ बोल न सकने की स्थिति में कालिदास वृद्धा के पैर पर गिर पड़े और पानी की याचना में गिड़गिड़ाने लगे। वृद्धा ने कहा- उठो वत्स! आवाज़ सुनकर कालिदास ने ऊपर देखा तो साक्षात माता सरस्वती वहाँ खड़ी थीं। कालिदास पुनः नत्मस्तक हो गए। माता ने कहा- शिक्षा से ज्ञान आता है न कि अहंकार। तूने शिक्षा के बल पर प्राप्त मान और प्रतिष्ठा को ही अपनी उपलब्धि मान लिया और अहंकार कर बैठे इसलिए मुझे तुम्हारे चक्षु खोलने के लिए ये स्वांग करना पड़ा।

कालिदास को अपनी गलती समझ में आ गई और भरपेट पानी पीकर वे आगे चल पड़े।

जैसी तेरी भावना

एक गांव में दो भाई रहते थे। उन दोनों भाइयों का आपस में बहुत प्यार था। लेकिन दोनों की खेती अलग-अलग थी। खेत आमने-सामने ही थे।

बड़े भाई की शादी हो चुकी थी व उसके बच्चे भी थे। छोटे भाई की अभी शादी नहीं हुई थी, वो अकेला ही था। एक बार खेती में दोनों ने ही बहुत मेहनत की, जिसकी वजह से खेती बहुत अच्छी हुई और अनाज का उत्पादन भी बहुत हुआ। एक दिन खेत में काम करते करते बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा कि तुम थोड़ी देर के लिए मेरे खेत की सम्भाल करना, मैं बस खाना खाकर आता हूँ, तब तक खेत का थोड़ा ध्यान रखना। ऐसा कहकर वह खाना खाने चला गया।

उसके जाते ही छोटा भाई सोचना लगा। खेती तो अच्छी हुई है इस बार, अनाज भी बहुत हुआ। उसने सोचा कि मैं तो अकेला ही हूँ। बड़े भाई की तो गृहस्थी है। मेरे लिए तो ये अनाज ज़रूरत से ज़्यादा है। भैया के साथ तो भाभी और बच्चे भी हैं, उन्हें इसकी ज़्यादा ज़रूरत है।

ऐसा विचार कर वह 10 बोरे अनाज बड़े भाई के अनाज में डाल देता है। बड़ा भाई भोजन करके आता है। उसके आते ही छोटा भाई अपने बड़े भाई को उसके खेत की सम्भाल करने को कहकर भोजन के लिए चला जाता है। छोटे भाई के जाते ही बड़ा भाई सोचता है कि मेरा गृहस्थ जीवन तो अच्छे से चल रहा है। भाई को तो अभी गृहस्थी जमानी है, उसे अभी अपनी ज़िन्दगी की शुरुआत करनी है, उसे अभी बहुत सी ज़िम्मेदारियाँ सम्भालनी हैं। मैं इतने अनाज का क्या करूंगा! ऐसा विचार कर वो 10 बोरे अनाज छोटे भाई के खेत में डाल देता है।

दोनों भाई के मन में हर्ष था। अनाज उतना का उतना ही था और हर्ष स्नेह वात्सल्य बढ़ा हुआ था। कहानी का भावार्थ है कि सोच अच्छी रखो तो प्रेम बढ़ेगा, दुनिया बदल जायेगी। जैसी तेरी भावना वैसा फल पावना...।।

बहादुरगढ़-हरियाणा। 63 गांवों के सरपंचों के लिए `जजमेंट पॉवर' विषय पर कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. अंजली, सम्बोधित करते हुए बी.डी.ओ. रामफल जी व ब्र.कु. अमृता।

दिल्ली। साकेत कोर्ट रेसिडेंशियल कॉम्प्लेक्स में न्यायविदों के लिए `हेल्दी हार्ट हेल्दी माइंड' विषय पर सम्बोधित करते हुए ख्याति प्राप्त डॉ. मोहित गुप्ता।

माधेपुरा-बिहार। `स्वास्थ्य सजगता के आयाम' विषयक राज्य स्तरीय सेमिनार के दौरान बी.एन. मंडल यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रंजू।

मोहाली-पंजाब। `अखिल भारतीय बेटी बचाओ सशक्त बनाओ' अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. रमा, बीबी परमजीत कॉर,लैण्ड्रन चेयर पर्सन पंजाब स्टेट वुमेन कमीशन, ब्र.कु. प्रेमलता, श्रीमती एस.नेसरा खातून,चीफ पार्लियामेंट्री सेक्रेट्री, ब्र.कु. शीला, ब्र.कु. किरण, ब्र.कु. गीता व ब्र.कु. अनीता।

बरनाला-पंजाब। जेल में कैदी भाइयों को ईश्वरीय संदेश देकर योग की अनुभूति कराते हुए ब्र.कु. सुदर्शन। साथ हैं जेल सुपरीन्टेंडेंट व एस.डी.ओ. निर्मल सिंह।

फरीदाबाद-सेक्टर 21 डी.। महाशिवरात्रि महोत्सव पर शिव संदेश देते हुए ब्र.कु. हरीश बहन। साथ हैं ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. ज्योति, गोल्ड फील्ड मेडिकल कॉलेज की डायरेक्टर शशि बहन व अन्य।